ISSN: 2278-4632
Vol-14, Issue-9, No.03,September: 2024

भीष्म साहनी के साहित्य में चित्रित नारी की विभिन्न समस्याएं

शालिनी मिश्रा (शोधार्थी) श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय, हनुमानगढ़
डॉ. प्रवीण शर्मा (शोध निर्देशक) श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय, हनुमानगढ़

प्रस्तावना :

प्रकृति ने नारी को कोमल और शारीरिक रूप से निर्बल बनाया हैजबकि पुरुष कठोर और सबल है। शक्ति और अधिकार के गर्व में पुरुष अधिकांशतःनारी का शोषण करता है। उसे शारीरिक और मानसिक रूप से कष्ट देता हे,जिससे नारी जीवन में कई समस्याएँ पैदा होती हैं। जब नारी के मन की कोमलभावनाओं को ठेस पहुंचाई जाती है तो नारी का प्रतिकार करना भी स्वाभाविक है।

भारतीय समाज में जो नारी जागरण उन्नीसवीं शताब्दी से प्रारम्भ हुआथा, उसे बीसवीं शताब्दी में विकास मिला और शिक्षा प्राप्त कर नारीसामाजिक–राजनीतिक जीवन से आगे बढ़ी। ''स्वतन्त्रता के आसपास भारतीयनैतिक मूल्यों में जो परिवर्तन हुआ उसने नारी को भी आंदोलित किया। मध्यवर्गीय मानसिकता से बाहर निकलकर उसने आधुनिक युग में प्रवेश किया औरस्वतंत्रता की मांग करने लगी। परन्तु पुरुष केन्द्रित समाज में यह सरल कार्य नहींहै। परम्परित पारिवारिक इकाइयाँ टूटने लगीं और उसका अधिक प्रभाव भारतीयनारी पर देखा जा सकता है।''

प्रेमचंद–युग में मुख्यतः नारी की सामाजिक समस्याओं का चित्रणहुआ। आधुनिक उपन्यासों में नारी मन की उथल–पुथल, स्त्री–पुरुष के आकर्षण,काम–भाव की समस्या का चित्रण हुआ। नारी घर की चारदीवारी को छोड़करसमानता एवं स्वतंत्रता का अधिकार प्राप्त करके आर्थिक रूप से स्वावलंबिनी बनी।नारी के घर से बाहर कदम रखते ही घर व बाहर की समस्या उत्पन्न हुई। अपनेविकसित व्यक्तित्व के कारण नारी अब पुरुष के शोषण को सहज रूप से स्वीकार नहीं कर पाती थी। अतः विकसित अहं–युगल की टकराहट से दाम्पत्य जीवन में विसंगतियाँ उत्पन्न हुई।

इस प्रकार सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक परिस्थितियों के बदलने के साथ नारी–पुरुष एवं नारी के पारिवारिक सम्बन्धों में भी बदलाव आया। नारी वही थी, परिस्थितियाँ बदल गई। नये माहौल में अपने आपको सम्मिलित करने में नारी के सामने अनेक समस्याएँ आयीं। नारी अपनी अस्मिता की पहचान चाहती है। समाज की रूढ़ियों और बौद्धिक परम्पराओं को तोड़कर पुरुष की तरह स्वच्छन्द जीवन जीना चाहती है, लेकिन पुरुष का अहं नारी के रास्तें में रुकावट बनता है जिससे भी समस्याएँ पैदा होती हैं।

भीष्म साहनी जी के साहित्य में भी नारी समस्याओं का विस्तृत वर्णन मिलता है। चाहे नारी विवाहित हो, अविवाहित हो, विधवा हो या वेश्या सबका जीवन समस्याओं से ग्रसित है। साहनी जी के साहित्य में चित्रित नारी–समस्याओं का वर्णन अग्रलिखित है।

विवाहित नारी की समस्या :

विवाह समाज की एक अनिवार्यता है, समस्या नहीं। किन्तु हमारेसमाज की विषम परिस्थितियों ने इस अनिवार्यता को भी एक समस्या का रूप देदिया है। विवाह के महत्त्व को ध्यान में रखते हुए डॉ. राधाकृष्णन ने कहा है कि–''विवाह एक संस्था के रूप में प्रेम की अभिव्यक्ति और विकास का एक साधनहै। विवाह केवल रूढ़ि नहीं है, अपितु मानव समाज की एक अन्तर्भूत दशा है।यद्यपि इसके आदर्श बदलते रहते हैं, फिर भी यह मानव साहचर्य का एक स्थायीरूप प्रतीत होता है।'' कोई भी स्त्री जब किसी पुरुष से विवाह करती है तो इसआशा में कि वह पुरुष उसके जीवन को सुखी बनायेगा। इस प्रकार विवाह संस्थास्त्री, पुरुष एवं समाज के इष्ट के लिए अस्तित्व में आई हैं। जब तक विवाह केनिश्चित आदर्शों का निर्वाह होता है, तब तक विवाह एक आदर्श व्यवस्था है लेकिनइन आदर्शों के लुप्त होने पर नारी के लिए विवाह एक समस्या बन जाता है।

भीष्म साहनी जी के साहित्य में नारी जीवन को संघर्षयुक्त दिखायागया है। नारी को दैनिक जीवन में अनेक कष्टों को सहना पड़ता है। विवाहितनारी के लिए सबसे बड़ी समस्या है माँ के सुखद अहसास को प्राप्त करने से वंचितरह जाना अर्थात् बांझपन की समस्या। 'पहला पाठ' कहानी–संग्रह में 'फूलां'कहानी में इस समस्या का वर्णन मिलता है। ''मोहमाया में डूबी हुई है, पर इससेइसका दिल तो भरा रहता है। बिल्ली से भी घर भरा–भरा तो लगता था। तीनजीव तो घर में सोते थे। अब तो यहाँ और खाली खाली लगेगा। फिर विचारों कीश्रृंखला स्मृतियों में जा मिली। मुंह में से हल्की–सी साँस निकली। सभी कहते थेकि हकीम आसानंद के पास गर्भ का

Copyright @ 2024 Author

ISSN: 2278-4632
Vol-14, Issue-9, No.03,September: 2024

नुस्खा है। जो उसकी दवाई करते तो शायदठीक हो जाती। शायद इसके भी बाल बच्चे हो जाते। फिर उसी वक्त दिल में एकऔर हूक सी उठी। मैंने भी जिन्दगी में क्या सुख पाया? बाँझ औरत घर बिठा ली।''
इसी प्रकार 'भटकती राख' कहानी–संग्रह में भी बांझपन की समस्यासे दुःखी नारी को दिखाया गया है। पति–पत्नी दोनों ही इस समस्या से परेशानहो जाते हैं। ''बहनजी, आँखों के सामने वंश का बीज नाश होता कौन देख सकताहै? कुछ न हुआ, ये मुझे पच्चीस डॉक्टर हकीमों के पास ले गये होंगे। बम्बई क्याऔर कलकत्ता क्या, हमने कोई शहर छोड़ा था? पर नसीब खोटे हों तो कोई क्याकरे? ये घर आते तो गुप–चुप–मुंह लटकाये बैठ जाते। मैं कहूँ, हाय इनके दिलको कैसा घुन लग गया है। अन्दर ही अन्दर गलते जाते थे।

अविवाहित नारी की समस्या :
भारतीय समाज में नारी का स्थान बहुत ऊँचा माना जाता है। प्रेमचंद के शब्दों में–''नारी अपने सहज रूप में प्रेम, समर्पण एवं विश्वास के गुणों से विभूषित है। वह पुरुष की हिंसाग्नि को शान्त करने वाली शीतला–धारी है, विश्व की मूल कल्याणकारी शक्ति है। मनुष्य के लिए क्षमा, त्याग और अहिंसा जीवन के उच्चतम आदर्श है। नारी इस आदर्श को प्राप्त कर चुकी है।'' इतना होने पर भी नारी का जीवन सामाजिक मर्यादाओं एवं नैतिकता के संकीर्ण घेरे से आबद्ध है और उसे अनेक सामाजिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। जब तक लड़की की शादी नहीं हो जाती वह घरवालों के लिए चिन्ता का विषय बन जाती है। समाज के लोगों की बुरी नजरों से बचाकर रखना पड़ता है। 'चाचा मंगलसेन' कहानी में ऐसा ही वर्णन मिलता है–''फिर बूढ़ा घुड़ककर फूलां से बोला, जो अभी उसकी खाट के पास ही किसी को परसाद बांट रही थी,''सौ बार कहा है लड़की ब्याह दो, जवान लड़की घर में बैठा रखी है।''
''मुझे क्या कहते हो चाचा, सुखदेई से कहो।''
''आज यह आया है, कल कोई और आयेगा। बूढ़ा अभी भी बड़बड़ाये जा रहा था।''
कई बार परिस्थितियाँ ऐसी हो जाती है कि नारी को स्वयं अपने पिता का घर संभालना पड़ जाता है। उसको अपने मन की इच्छाओं को दबाना पड़ताहै। 'कड़ियाँ' उपन्यास में महेन्द्र सुषमा के विषय में कहता है–''सुषमा भी भले घरकी लड़की है। उसके बाप को लकवा मार गया है, वह नागपुर में कहीं पड़ा है।रुपए जमा करके उसके ईलाज के लिए भेजती है। इसने स्वयं शादी नहीं कीक्योंकि घर में और कोई कमाने वाला नहीं था। बुरी औरत नहीं है। यह हम लोगोंका दंभ है कि हम काम करने वाली स्त्रियों को बुरा समझते हैं, यहाँ मजबूरी मेंपड़ी है, वरना अपना घर छोड़कर कौन आता है।''
विवाह से पहले नारी जीवन में शिक्षा से वंचित रह जाना भी एकसमस्या है। लड़कियों के पढ़ने–लिखने पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया जाता। जिसकेकारण उनका सम्पूर्ण विकास नहीं हो सकता। 'कुंतो' उपन्यास की पंक्तियाँ हैं
''आजकल समाजिए भी तो लोगों के गले पड़ते रहते हैं। क्या मालूम किसी समाजिएने ही सगाई तुड़वाई हो।''
वह हंसकर बोली, ''पर अब कुंतो का ब्याह कर दो। मेरी सलाह मानो,अब देरी न करो, इन्हीं जोड़ों में ब्याह कर दो।''
''कुंतों के इम्तहान का क्या होगा? उसे दसवीं का इम्तहान देना है।''
''इम्तहान बाद में देती रहेगी। न भी दिया तो भी कौन–सी उसेनौकरी करनी है।''
इस प्रकार विवाहित नारी की तरह अविवाहित नारी का जीवन भीसमस्याओं से युक्त होता है। विवाह से पूर्व लड़की की पूरी जिम्मेवारी माता–पितापर होती है परन्तु जब तक वे लड़की की शादी नहीं कर देते तब तक उसे बोझही समझते हैं।

विधवा नारी की समस्या :
विधवा समस्या ने नारी के अमानुषिक शोषण के साथ ही कई सामाजिक और नैतिक समस्याओं को जन्म दिया है। यह नारी जीवन की ऐसी विडम्बना है जो निर्दोष नारी को अनेक दोषों का मूल बना देती है। हिन्दू समाज में विधवा का दोहरा शोषण होता है। ''एक ओर वह समस्त मानवीय अधिकारों से वंचित कर दी जाती है और दूसरी ओर उसके चरित्र की नाप–जोख इतनी सूक्ष्म और पैनी दृष्टि से की जाती है, मानो हिन्दू धर्म का सम्पूर्ण अस्तित्व ही उसके सच्चरित्र रहने पर ही टिका है।''
विधवा होने की स्थिति को नारी के लिए अभिशाप के रूप में स्वीकार किया जाना परम्परा बन गई है। ''पति की मृत्य के पश्चात नारी आर्थिक दृष्टि से परमुखापेक्षिणी बनती थी इस कारण आश्रयदाता की सम्पूर्ण भर्त्सना, तिरस्कार तथा अवमानना सहना उसकी नियति बन जाती थी। ऐसी दशा में उसके शारीरिक पक्ष को तो एकदम

Copyright @ 2024 Author

ही उपेक्षित कर दिया जाता था, क्योंकि पुनर्विवाह जैसी व्यवस्था मध्यवर्गीय विधवा के लिए आज भी सहज सुलभ नहीं है। परिणामस्वरूप शरीर की स्वाभाविक मांग–पूर्ति अवैध रूप में करने को विवश नारी सामाजिक भर्त्सना की शिकार बनती है।'' बिन्दु अग्रवाल के अनुसार, ''हिन्दू विधवा का जीवन स्वयं बड़ी तपस्या है।''

दहेज प्रथा की समस्या :

भारतीय समाज–जीवन में सभी जाति–धर्मों में दहेज प्रथा का प्रचलनदबड़ा तेज होता नजर आता है। आज की बढ़ती हुई भौतिकवादी दृष्टि ने दहेज को तो आश्रय ही प्रदान किया है। दहेज एक सामाजिक बुराई तो है ही साथ ही अन्य बुराइयों की जड़ भी। ''अर्थाभाव के कारण मजबूर माँ–बाप को अपनी बेटी की शादी किसी अयोग्य युवक या पुरुष के साथ करनी पड़ती है। शादी के समय दहेज अधिक न लाने वाली लड़की को अनेक यातनाओं का सामना करना पड़ता है। पति, सास–ससुर द्वारा उसे गाली–गलौच, मार, अपमान और छल कपट से तंग किया जाता है।'' डॉ. उषा यादव के अनुसार, ''दहेज प्रथा एक ऐसा भयावह दानव है जो किसी परिवार की सुख शान्ति को पल में लील जाता है।''

दहेज की समस्या नारी जीवन के लिए समस्या है। इससे एक बात सामने आती है कि आजादी के सत्तर साल बाद भी अनेक गाँवों–नगरों में आर्थिक संकट के कारण अनमेल विवाह होते रहते है। लड़कियों द्वारा दहेज न लाने या कम लाने पर उन्हें अनेक यातनाओं का सामना करना पड़ता है, रिश्ते नाते फीके दृष्टिगत होते हैं। माँ–बाप को मजबूर होकर सामाजिक इज्जत की रक्षा हेतु अपनी लड़की को किसी न किसी के साथ ब्याहना पड़ता है। ऐसे समय पर विवाह विवाह न होकर एक व्यापार होता है।

नारी शोषण की समस्या :

''शोषण सिर्फ कार्यशील महिलाओं का ही नहीं, यह तो सम्पूर्ण नारी जाति की नियति है।'

पुरुष प्राचीन काल से ही नारी का शोषण करता आया है। आधुनिक समाज में शिक्षित और समर्थ नारी भी पुरुष द्वारा शोषित होती है। साहनी जी के साहित्य में नारी शोषण की समस्या का भी वर्णन मिलता है।

नारी का शोषण हर जगह होता है अगर वह अमीर है तो कुछ हद तक ठीक रह सकती है परन्तु गरीब हो तो उस पर दुःखों का पहाड़ टूट जाता है। हर कहीं से उसे तिरस्कार मिलता है।

इस प्रकार समाज में नारी शोषण की समस्या ज्यों की त्यों बनी हुई है। इस शोषण का मुख्य कारण यह है कि पुरुष अभी भी अहंकार और प्रभुत्व की अपनी परम्परागत प्रवृत्ति से मुक्त नहीं हो पाया है। साथ ही नारी नवीन विचारों की दिशा लेकर भी अपने प्राचीन संस्कारों से मुक्त नहीं हो पाई है।

नारी स्वातंत्रय की समस्या :

''नारी स्वातन्त्र्य का अर्थ है–नारी के स्वतन्त्र अस्तित्व और व्यक्तित्व की मान्यता उसके प्रति एक उदार, आदरपूर्ण, शुचितामय दृष्टिकोण, जो अधिक स्वस्थ्य संयत और मानवीय हो।'' आज की नारी पुरुष की सम्पूर्ण सम्पत्ति बनकर जीवन यापन करना अपमान समझती है। परन्तु नारी को स्वतंत्र नहीं रहने दिया जाता। पुरुष वर्ग ऐसा है जो नारी वर्ग को हमेशा से अपने अधीन समझता है।

नारी को समाज में स्वतन्त्र नहीं रहने दिया जाता। उसे माता–पिता, पति और सास–ससुर की आज्ञा का पालन करना पड़ता है और उन्हीं के अनुसार चलना पड़ता है। परन्तु अगर समाज में वास्तविक उन्नति चाहिए तो नारी को स्वतन्त्रता प्रदान करनी पड़ेगी।

आपसी ईर्ष्या की समस्या :

आपसी ईर्ष्या की समस्या नारी की जन्मजात प्रवृत्ति है। वह प्रारम्भ से ही दूसरी नारियों की सुख–शान्ति को देखकर हमेशा ईर्ष्या करती रहती है।

ईर्ष्या का छोटा–सा बीज कभी–कभी बढ़कर इतना बड़ा वृक्ष बन जाता है कि उसकी पत्तियों के हिलने से उत्पन्न होने वाली जहरीली हवा, उस पर निकलने वाले जहरीले फूल और फल, सम्पूर्ण पारिवारिक परिवेश को विषाकत कर देते हैं।'' प्रेरक सूक्ति कोश में ईर्ष्या के विषय में कहा गया है, ''केवल ईर्ष्या ही वह भावना है, जो शान्त नहीं रहती बल्कि हमेशा किसी न किसी कारण से उत्तेजित होती रहती है।''

साहनी जी के साहित्य में नारी की ईर्ष्या की समस्या मिलती है। उन्होंने स्पष्ट किया है कि किस प्रकार नारी दूसरे को सुखी देखकर दुःखी होती है।

 Copyright @ 2024 Author

नारी में ईर्ष्या भावना अधिक होती है। वह स्वयं चाहे हर सुख वैभव से परिपूर्ण है परन्तु अगर दूसरी नारी के पास कुछ अलग है तो वह उससे ईर्ष्या करने लगती है। हर सुख होते हुए भी वह सुखी नहीं रह सकती। वह स्वयं को ऊपर रखना चाहती है। अतः ईर्ष्या की समस्या एक ऐसी समस्या है जिसके कारण नारी समाज कभी प्रसन्न नहीं रह सकता।

ऐश्वर्यपूर्ण जीवन एवं भोग विलास की समस्या :

ऐश्वर्यपूर्ण जीवन व्यतीत करना भी नारी जीवन की समस्या है। नारी की यह इच्छा होती है कि उसे जीवन का हर सुख, वैभव, ऐश्वर्य प्राप्त हो। अगर उसकी यह इच्छा पूर्ण नहीं होती तो यह उसके लिए समस्या बन जाती है। साहनी जी ने भी उनकी इस समस्या को अपने साहित्य में स्पष्ट किया है। 'ललिता' कहानी में ललिता के रूप–शृंगार को दिखाया गया है,

''ब्याह के तीसरे दिन बाद जब ललिता मायके आई, तो उसका रूप संभाले न संभलता था। छमछम करते गहने, रेशमी कामदार सूट, मुंह पर पाउडर और सुर्खी, हंस–हंसकर ससुराल की वार्ता कहने लगी। छतों से लटकते बिल्लौरी लैम्पों से लेकर, अपनी जेठानियों के बीस–बीस जोड़े जूतों तक वह गिन गई। उनकी बातें करती जाती और हंसी से लोटपोट होती जाती।'' 'चीफ की दावत' कहानी में भीदिखाया गया है कि साहब की पत्नी ऐश्वर्यपूर्ण जीवन बिता रही है, ''उनकी स्त्री,काला गाऊन पहने, गले में सफेद मोतियों का हार, सेंट और पाउडर की महक सेओत–प्रोत, कमरे में बैठी सभी देसी स्त्रियों की आराधना का केन्द्र बनी हुई थी।बात–बात पर हंसती, बात–बात पर सिर हिलाती।'' 'डोरे' कहानी में भी दफ्तरमें नौकरी करने वाली नारियाँ भी भोग–विलास की वार्तालाप करती रहती हैं।

''दफ्तर में काम करने वाली स्त्रियों की अपनी मण्डलियाँ बन गयी थीं। कैन्टीन मेंछोटी उम्र की लड़कियाँ अलग बैठती ओर सारा वक्त चहकती रहती, बात–बे–बातहंसती, सिनेमा, फिल्मों के वार्तालाप दोहराती, फिल्मी गीत गुनगुनाती, पैसेजोड़–जोड़कर नयी साड़ियाँ खरीद पाने की बात करती।

'मेड इन इटली' कहानी में मीरा को पूर्णतया ऐश्वर्यपूर्ण जीवन एवं भोग विलास की तरफ आकर्षित दिखाया गया है। ''मीरा की शॉपिंग–लिस्ट पूरी होचली थी। लन्दन से मीरा ने ऊनी सामान खरीदा था, पेरिस से इत्र और नाइटीज,बर्लिन से ट्रांजिस्टर और टेप रिकार्डर। रोम तक पहुंचते–पहुंचते उसकी सारीखरीददारी लगभग पूरी हो चली थी, पर ऐसा बैग नहीं मिला था। यहाँ पर वहभी मिल गया।'' 'कड़ियाँ' उपन्यास की सुषमा भी ऐश्वर्यपूर्ण जीवन व्यतीत करतीहै। वह अपनी साज–सज्जा का विशेष ध्यान रखती है। ''सामने की दीवार केसाथ रखे एक सोफे पर कुछेक ग्रामोफोन रिकार्ड बिखरे पड़े थे और बगल में एकतिपाई पर ग्रामोफोन खुला रखा था। लगता था, उसके आने से पहले सुषमारिकार्ड बजाती रही। इसी कमरे में सुषमा का ड्रेसिंग टेबल भी था जहाँ एक ट्रे मेंबहुत सी कांच की चूड़ियाँ, झूठे मोतियों और तरह–तरह के मणकों के हार,तीन–चार तरह की लिपिस्टिक, पाउडर, क्रीम... महेन्द्र की उत्तेजित कल्पना सुषमाको ड्रेसिंग टेबल के सामने खड़े शृंगार करते देखने लगी।'' इस प्रकार नारियाँऐश्वर्य पूर्ण जीवन व्यतीत करती हैं या फिर प्राप्त करना चाहती हैं। यह भी नारीजीवन की एक समस्या ही है, जो उसके जीवन में उथल–पुथल पैदा करती है।

निष्कर्ष :

निष्कर्ष रूप में हम यह कह सकते हैं कि नारी का जीवन बड़ी ही कठिन एवं कठोर तपस्या है। उसे कदम–कदम पर समस्याओं, मुश्किलों का सामना करना पड़ता है। चाहे वह विवाहित है या फिर अविवाहित नारी है। विवाहित नारी पर गृहस्थी जीवन का भार बढ़ जाता है। उसकी स्वतन्त्रता पर उसका स्वयं का अधिकार ना होकर अपितु पति एवं सास–ससुर का होता है। जबकि अविवाहित नारी को माता–पिता की आज्ञा का पालन करना पड़ता है। वे जहाँ अपनी बेटी का विवाह करते हैं। लड़की के लिए वही सर्वस्व होता है। इतना सब कुछ होने पर भी नारी दहेज प्रथा, अनमेल विवाह, विधवा जीवन आदि समस्याओं से झूझती रहती हैं। ये ऐसी समस्याएँ हैं जो नारी को समाज से मिलती है। परन्तु आभूषण की समस्या, आपसी ईर्ष्या की समस्याएँ ऐसी समस्याएँ हैं जिनसे नारी स्वयं ही ग्रसित होती है। अतः नारी को इन समस्याओं को दूर करने के लिए स्वयं को जागरूक करना पड़ेगा। जब तक सम्पूर्ण जगत इन समस्याओं को लेकर जागृत नहीं होगा तब तक नारी जगत का पूर्ण विकास नहीं हो सकता।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची –

1. शर्मा, पृथ्वीराज (2004) भीष्म साहनी : व्यक्तिव और कथा रचना, आशा प्रकाशन, जयपुर, पृ.सं. 64

 Copyright @ 2024 Author

ISSN: 2278-4632
Vol-14, Issue-9, No.03,September: 2024

2. कुमार, राधा (2005) स्त्री संघर्ष का इतिहास (1800–1990), वाणी प्रकाशन, दिल्ली, पृ.सं. 118
3. गबा, ओम प्रकाश (2009) समाज विज्ञान कोश, बी.आर. पब्लिशिंग दिल्ली पृ.सं. 122
4. डॉ. राणा, मीनू (2010) आधुनिक नारी दशा और दिशाएं सूर्य भारती प्रकाशन, दिल्ली, पृ.सं. 74
5. गोयंदका, जयदयाल (2010) स्त्रियों के लिए कर्त्तव्य शिक्षा, गीता प्रेस, गोरखपुर, उत्तर प्रदेश पृ.सं. 22
6. डॉ. जोशी, वन्दना (2012) वृहत अंग्रेजी–हिन्दी कोश, शारदा प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली पृ.सं. 155
7. वर्मा, जगदीश चन्द्र (2015) मानक हिन्दी कोश, नमन प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, पृ.सं. 154,155
8. डॉ. पाल, रमा (2015) हिन्दी के सामाजिक उपन्यासों में नारी, शारदा प्रकाशन, भोपाल, म.प्र. पृ.सं. 34–36
9. डॉ. तिवारी, शिवम (2017) : हिन्दी काव्य में नारी, रघु प्रकाषन, नई दिल्ली पृ.सं. 24–28
10. डॉ. मिश्रा, एस.एम. (2018) आधुनिक हिन्दी काव्य में नारी विद्या प्रकाशन, रोहिणी, नई दिल्ली, पृ.सं. 25–29

Copyright @ 2024 Author